हरे कृष्ण

मैं गोपाल कृष्ण गोस्वामी, उर्फ गोपाल कृष्ण खन्ना, पुत्र स्वर्गीय श्री आनंद स्वरूप खन्ना, जन्म 14 अगस्त 1944 इस्कॉन दिल्ली, हरे कृष्णा हिल्स, संतनगर, ईस्ट ऑफ कैलाश, नई दिल्ली का निवासी हूँ, अपने पिछले सभी इच्छा-पत्रों को रद्द करते हुए यह घोषणा करता हूँ कि यह मेरा आखिरी इच्छा-पत्र है, जिसे मैं 23 नवंबर, 2023 को इस्कॉन दिल्ली, हरे कृष्णा हिल्स, संतनगर, ईस्ट ऑफ कैलाश, नई दिल्ली में बना रहा हूँ। मैं एक संन्यासी हूँ और मेरा कोई आश्रित नहीं है।

मैं घोषणा करता हूँ कि मैं अच्छे स्वास्थ्य में हूँ और स्वस्थ दिमाग धारण करता हूँ। यह इच्छा पत्र मेरे द्वारा बिना किसी अनुनय या दबाव के और केवल अपने स्वतंत्र निर्णय से बनाया गया है। मैं इस इच्छा-पत्र के निष्पादक के रूप में निम्नलिखित को नियुक्त करता हूँ।

वैष्णव महाराज (भारत के लिए)

जनार्दन महाराज (भारत के लिए)

ऋषि कुमार दास (भारत के लिए)

अंबरीश महाराज (रूस के लिए)

उमापति प्रभु (पूर्वी अफ्रीका के लिए)

इनमें से किसी की मृत्यु मुझ से पहले होने की स्थिति में, उपरोक्त में से जो भी उत्तरजीवी होगा वही इस इच्छा-पत्र का निष्पादक होगा। मैं इस्कॉन इंडिया और बीबीटी का ट्रस्टी और गवर्निंग बॉडी कमिश्नर हूँ। मैं इस्कॉन सेवा ट्रस्ट, एक ब्यूरो नियंत्रित ट्रस्ट, इस्कॉन ब्यूरो द्वारा दिल्ली में स्थापित एक निष्क्रिय ट्रस्ट को छोड़कर किसी अन्य ट्रस्ट का ट्रस्टी नहीं हूँ।

मैं सदैव इस्कॉन के गवर्निंग बॉडी कमीशन और अन्तर्राष्ट्रीय कृष्णभावनामृत संघ के संस्थापक-आचार्य, श्रील प्रभुपाद की शिक्षाओं के प्रति वफादार रहा हूँ, जैसा कि उनकी पुस्तकों में परिलिखित होता है। मैं चाहूंगा कि मेरे सभी शिष्य जीबीसी बॉडी का अनुगमन करें। मैंने कभी इस्कॉन से एक कदम भी बाहर नहीं निकाला है और मेरी इच्छा है कि मेरे सभी शिष्य इस्कॉन में अपनी सेवाएँ प्रदान करें और किसी सरल मार्ग की खोज में बाहर निकलकर इधर-उधर न भागें।

गुरु स्वयं को वपु और वाणी, दो माध्यमों से प्रकट करते हैं। जैसा कि आपने

कई बार सुना होगा कि वपु अस्थायी है और वाणी स्थाई है। मेरे सभी निर्देश श्रील प्रभुपाद की पुस्तकों से लिए गए हैं और उनके निर्देशों के प्रतिबिंब हैं। श्रील प्रभुपाद ने कहा था कि मेरे प्रति आपका प्रेम इस बात से प्रदर्शित होगा कि आप आपस में कितना सहयोग करते हैं। और मेरे सभी शिष्यों से मेरी यही इच्छा है कि वे आपस में और इस्कॉन प्राधिकरण के साथ सदैव सहयोग करें।

यदि मेरी मृत्यु भारत के बाहर होती है, तो मैं आभारी रहूँगा यदि मेरे शरीर को वृन्दावन या मायापुर लाया जा सके और वहाँ समाधि में रखा जा सके। यदि मेरी मृत्यु उत्तर भारत में हो तो मैं चाहूंगा कि मेरी समाधि वृन्दावन में हो। यदि मैं मायापुर के निकट शरीर छोडूं तो मैं चाहूंगा कि मेरी समाधि मायापुर में हो। वृन्दावन में एक प्लाट है जहाँ मेरे शिष्य मेरे लिए एक घर बनाना चाहते थे। मैं उसे प्रोत्साहित नहीं करता हूँ। मेरी इच्छा है कि यह विशिष्ट भूमि इस्कॉन वृन्दावन को किसी भी उद्देश्य, के लिए दान कर दी जाए, जिसे वे उचित समझें। मैं लगभग हर किसी मंदिर में अपनी अलग तस्वीर देखता हूँ जहां मेरे शिष्य सेवा करते हैं। वे अपनी पसंद की कोई भी तस्वीर चुन सकते हैं। यह प्रथा मेरे जाने के बाद भी जारी रह सकती है।

मेरे नाम पर वास्तव में कोई संपत्ति, नकदी, बैंक जमा, तिजोरी, वाहन, भंडार या कोई संपत्ति नहीं है। इस्कॉन में मेरे द्वारा प्रबंधित क्षेत्रों की सभी संपत्तियां कानूनी तौर पर इस्कॉन के नाम पर पंजीकृत हैं, इसलिए श्रील प्रभुपाद द्वारा 1977 में मुझे उपहार में दी गई एक रोलेक्स घड़ी के अतिरिक्त मेरे नाम पर कुछ भी नहीं है। मेरी इच्छा है कि यह घड़ी मेरे शिष्यों में से किसी एक को सौंप दी जाए, जिसने श्रील प्रभुपाद की सेवा करने में मेरी सहायता की है। मेरा लैपटॉप और दो मोबाइल हैं। मेरे शरीर छोड़ने के समय जो भी मेरा सचिव होगा, सभी लॉगिन और पासवर्ड के साथ लैपटॉप और मोबाइल उसके संरक्षण में रहेंगे। मेरे वस्त्र और स्वेटर मेरे सहायकों की टीम द्वारा शिष्यों और अन्य भक्तों को वितरित किए जा सकते हैं। अलग-अलग स्थानों पर अलग-अलग शिष्यों द्वारा प्रकाशित मेरे कुछ प्रवचन प्रतिलेखों के अतिरिक्त मेरे द्वारा संकलित कोई पुस्तक नहीं है। उन पर मेरा कोई प्रकाशनाधिकार (कॉपीराइट) नहीं है।

मेरी एकमात्र वास्तविक संपत्ति मेरे व्यक्तिगत विग्रह हैं और मैं नहीं चाहता कि इनकी पूजा कोई एक विशेष व्यक्ति करे। इसलिए मेरी इच्छा है कि मेरी शालिग्राम शिलाओं और विग्रहों को मन्दिर की वेदी में रखा जाए और श्री श्री राधा पार्थसारथी मंदिर, इस्कॉन दिल्ली में पूजा की जाए। श्री श्री राधा राधिका

रमण मंदिर, इस्कॉन पंजाबी बाग और मेरे क्षेत्रों के अन्य मंदिरों के बीच भी विभाजित किये जा सकते हैं। मैं ऐसा इसलिए चाहता हूँ कि यदि विग्रह मंदिर की वेदी में हैं तो वे सुरक्षित रहेंगे और यदि उनकी पूजा व्यक्तियों द्वारा की जाती है तो उनकी सेवा में लापरवाही हो सकती है। मैं कुछ थोड़ी लक्ष्मी रखता हूँ, अर्थात् जिस धन का उपयोग कृष्ण की सेवा में विभिन्न परियोजनाओं के लिए किया जाना चाहिए, इस लक्ष्मी को मेरे निधन के समय चल रही विभिन्न परियोजनाओं में विभाजित किया जा सकता है। मेरा अमेरिका में मेरे शिष्य जगन्नाथ प्रीय दास के साथ एक संयुक्त बैंक खाता है और इसमें पिछले चार वर्षों से लगभग तीन हजार डॉलर का बैलेंस हैं; मुख्य रूप से अपने ग्रीन कार्ड को सुरक्षित रखने के लिए मैंने इस अमेरिकी खाते में लेनदेन किया है। मेरा कोई व्यक्तिगत ऋण नहीं है और न ही मुझ पर किसी का कोई ऋण बकाया है।

मैं इस इच्छा-पत्र के द्वारा पांच डॉक्टर शिष्यों को, जो अभी व्यक्तिगत रूप से मेरी सेवा कर रहे हैं, मेरे निर्णय न ले पाने की स्थिति में मेरे चिकित्सा उपचार और व्यक्तिगत देखभाल को एक साथ निर्धारित करने के प्रतिनिधि के रूप में नियुक्त करता हूँ। इन डॉक्टरों के नाम हैं:-

डॉ. द्वारकाधीश दास,

डॉ. कृष्ण प्रिय दास,

डॉ. अद्वैत आचार्य दास (वाशिंगटन से),

डॉ. राधा वल्लभ दास,

डॉ. अजय चैतन्य दास

मुझे वास्तव में प्रसन्नता होगी और मैं आभारी रहूँगा, यदि मेरे शरीर छोड़ने के पश्चात् मेरे सभी शिष्य स्वतंत्र हुए बिना इस आंदोलन के वरिष्ठ भक्तों में से एक का आश्रय लेते हैं और श्रील प्रभुपाद द्वारा स्थापित और प्रदान की गई प्रबंधन प्रणाली का पालन करते हैं।

मैं अपने सभी शिष्यों को निर्देश देता हूँ कि मेरे शरीर छोड़ने के पश्चात् वे निम्नलिखित तरीके से व्यवहार करें:-

1. सदैव कृष्णकृपामूर्ति ए.सी. भक्तिवेदांत स्वामी प्रभुपाद, (अन्तर्राष्ट्रीय कृष्णभावनामृत संघ के संस्थापक-आचार्य) को सर्वकालिक पूर्वप्रतिष्ठित शिक्षा गुरु के रूप में स्वीकार करें।

2. सदैव इस्कॉन के जीबीसी को इस्कॉन के अंतिम प्रबंधन प्राधिकरण एवं श्रील प्रभुपाद के प्रतिनिधि के रूप में स्वीकार करें और इसलिए इसके निर्देशों तथा मार्गदर्शनों का पालन करें।

3. इस्कॉन और श्रील प्रभुपाद के अनुकरणीय प्रतिनिधि बनने के लिए अपना जीवन व्यतीत करें।

4. इस आंदोलन को आगे बढ़ाने के लिए अन्य सभी इस्कॉन भक्तों के साथ मिलकर सहयोग करें।

5. जब आप में से कुछ शिष्य गुरु और संन्यासी बनने के लिए पर्याप्त रूप से प्रगति कर लेते हैं तो उन सेवाओं को लेने के लिए जीबीसी के तहत कार्य करने के लिए अधिकृत प्रक्रियाओं का पालन करें।

6. इस्कॉन को कभी न छोड़ें। सबसे पहले और सबसे महत्वपूर्ण, अपने आप को इस्कॉन का सदस्य समझें। इस्कॉन से कभी न झगड़ें। अपने मतभेदों को आंतरिक रूप से वैष्णव विधि से हल करें।

7. कभी भी अपने आप को ऐसे व्यक्तियों या समूहों के साथ न जोड़ें जो जीबीसी द्वारा अधिकृत नहीं हैं।

8. श्रील प्रभुपाद की पुस्तकों का नियमित रूप से गंभीरता से अध्ययन करें। प्रतिदिन कम से कम सोलह माला जप अवश्य करें। एकादशियों और विशेष तिथियों में कम से कम पच्चीस माला जप करें। और मांस न खाने, नशा न करने, जुआ न खेलने तथा अवैध यौन संबंध न बनाने के चार नियामक सिद्धांतों का कठोरता से पालन करें।

9. इस्कॉन को एक गतिशील संघ बनाने के लिए कार्य करें।

10. इस्कॉन के कार्यों के लिए अपना समय और संसाधन दान करना जारी रखें।

मैं बताना चाहता हूँ कि एक भक्त के रूप में मेरे सभी प्रयास श्रील प्रभुपाद और अन्तर्राष्ट्रीय कृष्णभावनामृत संघ (इस्कॉन) की सेवा करना रहे हैं। और मेरे पास अपने विग्रहों के अतिरिक्त अपना कुछ भी नहीं है, इसलिए मैं आगे निर्देश देता हूँ कि मेरे या मेरे शिष्यों द्वारा प्रेरित या निर्देशित मंदिरों, फाउंडेशनों और हमारी परियोजनाओं सहित किसी भी संपत्ति को हमेशा जीबीसी के संरक्षण और निर्देशों के अंतर्गत रहना चाहिए, जो इस्कॉन का अंतिम प्रबंध प्राधिकारी है।

श्रील प्रभुपाद के प्रति आपकी सेवा और प्रेम के लिए धन्यवाद। आपकी सेवा करना मेरा सौभाग्य रहा है।

मैं अपने आध्यात्मिक गुरु, इस्कॉन के संस्थापक आचार्य और पूर्व-प्रतिष्ठित शिक्षा गुरु, और आध्यात्मिक जगत से आये हुए भगवान कृष्ण के एक शुद्ध भक्त श्रील प्रभुपाद को अपने इस घर में आश्रय प्रदान करने के लिए धन्यवाद देता हूँ, जिसका निर्माण उन्होंने पूरी दुनिया के रहने के लिए किया। और मेरी इच्छा है कि मेरे सभी शिष्य उस घर में रहें, कृष्णभावनामृत के उच्चतम दर्शन को आत्मसात करें और उससे भी ऊपर कृष्णभावनामृत के दर्शन का अभ्यास करें। हरे कृष्णा!